Volume-3, No. I, Feb-2016, pp. 93-95

बाल श्रमिकों के शैक्षिक उन्नयन में वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों की भूमिका

श्री नरेन्द्र कुमार शर्मा,

वीरखेड़ा कॉलिज वीरखेड़ा, बुलन्दशहर उ.प्र. भारत।

सार

बाल श्रम एक गंभीर समस्या है भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक राज्य को शिक्षा की व्यवस्था करना उसका मौलिक कर्तव्य है इसके लिये राज्य को अपने कानून का प्रयोग करके कम उम्र के बालकों को श्रम करने से रोकने का अधिकार है। परिवार की आर्थिक स्थिति निम्न होने पर बालक कम उम्र में श्रमिक बन जाता है तथा बाल श्रम बालक को निरक्षर बना देता है। बाल श्रमिकों की निरक्षरता को दूर करने के लिये विश्व बैंक द्वारा डी०पी०ई०पी० कार्यक्रम के अर्न्तगत वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों की व्यवस्था की गयी है इन शिक्षा केन्द्रों के चार प्रकार है शिक्षाघर, बालशाला, प्रहरपाठशाला, व मदरसे। प्रस्तुत समस्या में इन शिक्षा केन्द्रों की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य बिन्दुः– अध्ययन के उद्देश्य, बाल श्रम, डी०पी०ई०पी०, वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र, निरक्षर।

वर्तमान समय में बाल श्रम एक बहुत गंभीर समस्या है, अतः इस समस्या से सम्बन्धित सभी क्षेत्रों का अध्ययन करना बहुत जरूरी है। बाल श्रम की समस्या ने वर्तमान समय में काफी ध्यान आकर्षित किया है। अतः बाल श्रमिकों के विस्तृत अध्ययन हेतु भी हमें उपरोक्त समस्या की आवश्यकता है बाल श्रमिकों में अधिकांश बालक मुस्लिम समुदाय से ही सम्बन्धित है। उत्तर प्रदेश के कई महानगरों जैसे मुरादाबाद, फिरोजाबाद, अलीगढ़ आदि में स्थापित कारखानों में बहुत बड़ी संख्या मे बाल श्रमिक कार्यरत है बाल श्रम एक कुप्रथा है तथा इसे तब तक दूर नहीं किया जा सकता जब तक कि सभी बाल श्रमिकों के अभिभावक इसे जड़ से समाप्त करने में सहायता प्रदान न करें। इस संदर्भ में न्यायालय ने महत्वपूर्ण व्यवस्था की है तथा इंस समस्या के समाधान हेतु विशेष अधिनियम बनाये है इसके अर्न्तगत 14 वर्ष तक के बालकों के लिये अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम रखा हैं संविधान के अधिनियम 45 में बाल श्रमिकों के लिये विशेष प्रावधान है तथा अधिनियम 46 में अनुसूचित जातियों, पिछड़े वर्गों के लिये विशेष रूप से शिक्षा की व्यवस्था की गयी है।

एक सर्वेक्षण के अनुसार मुरादाबाद शहर जो पीतल नगरी के नाम से प्रसिद्ध है, यहाँ पीतल के कारखानों में कार्यरत बाल श्रमिकों की संख्या लगभग 8099 है जिनमें से कुछ बालक ऐसे है जो कार्य करने के साथ–साथ अपनी पढ़ाई भी करते है तथा अधिकांश बच्चे ऐसे है जो बिल्कुल भी स्कूलों में नहीं जाते है क्योंकि इनकी आर्थिक स्थिति बहुत निम्न स्तर की है।

इस संदर्भ में जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा महत्व पूर्ण कदम उठाये जा रहे हैं। डी०पी०ई०पी० ने मुरादाबाद शहर में वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों की व्यवस्था की है जिसकी सहायता से बाल श्रमिकों को शिक्षित किया जा सके विश्व बैंक द्वारा उठाया गया यह कदम प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में काफी महत्व पूर्ण हैं।

अध्ययन के उद्देश्यः– प्रस्तुत अध्ययन में निम्न उद्देश्यों को दृष्टिगत किया गया है।

1.वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों को संचालित करने वाले अध्यापकों की शैक्षिक क्षमताओं का अध्ययन करना।

2.वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों में अध्ययनरत छात्रों की उपलब्धियों का मूल्यांकन करना।

3.वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों की आंतरिक संरचना का अध्ययन करना।

4.शिक्षा केन्द्रों में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं के अभिभावकों की अभिवृत्तियों का अध्ययन।

परिकल्पनाः– प्रस्तुत अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पनायें बनायी गयी हैं।

बाल श्रमिकों छात्र/छात्राओं की गणित तथा हिन्दी विषय में सही उत्तर देने, गलत उत्तर देने तथा संदेहात्मक उत्तर देने की क्षमता में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।

जनसंख्या एवं न्यायादर्श चयनः– प्रस्तुत अध्ययन हेतु मुरादाबाद शहर में संचालित वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों के बालक एवं बालिकाओं को सम्मलित किया गया पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना व्यवहारिक नहीं है और न ही समय अभाव के कारण संभव है अतः न्यायादर्श के चयन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया है इस विधि के द्वारा

मुरादाबाद जनपद के कुल 15 वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों के 570 बच्चों में से एक शिक्षा केन्द्र के 30 बच्चों का चयन किया गया है, एक अध्यापक का चयन किया तथा बाल श्रमिकों के 10 अभिभावकों का चयन किया गया है।

प्रदत्त संकलन–

1. अध्यापकों की शैक्षिक क्षमताओं के मूल्यांकन हेतु Teacher Rating Scale मापनी का प्रयोग किया गया है।
2. वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों में अध्ययनरत छात्रों की उपलब्धियों का मूल्यांकन करने हेतु गणित एवं हिन्दी भाषा के उपलब्धि परीक्षणों का प्रयोग किया गया है।
3. वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र की आन्तरिक संरचना के अध्ययन हेतु निम्न प्रदत्त संकलित किये गये है।

सारणी

कमरा तथा पूर्ण क्षेत्रफल	2, 33 वर्ग गज
अन्य कमरा	कोई नहीं
शौचालय	हाँ
खेल का मैदान	नहीं
पीने का पानी	हाँ
परिसीमा	हाँ अच्छी स्थिति में
अध्ययन कक्ष सामग्री	
चार्ट	76%
खेल का सामान	86%
गणितीय सामग्री	83%
अन्य	86%
अध्ययन अध्यापन सामग्री	
पुस्ताकालय	नहीं
फर्नीचर	नहीं
छात्रों के लिये	नहीं
अध्यापक के लिए	एक कुर्सी एक मेज
विद्युत हाँ	80%
विद्युत नहीं	20%

4. अभिभावकों की अभिवृत्ति के मापन हेतु बाल श्रमिक अभिभावक अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध परिणाम एवं निष्कर्ष

1. शिक्षक रेटिंग स्केल के अध्ययन से पता चलता है कि मुरादाबाद में प्रत्येक वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र को एक शिक्षक संचालित करता है जो छात्रों के प्रति पूर्ण रूप से सचेत है, अपने व्यवसाय के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हैं, छात्रों से प्रश्न पूछने की विधि उत्तम है, कक्षा पर नियन्त्रण काफी अच्छा है तथा शिक्षक श्यामपट कार्य में पारंगत है और बोलने की क्षमता काफी अच्छी है।
2. संकलित प्रदत्तों के आधार पर 30 छात्र/छात्रों की गणित एवं हिन्दी भाषा में गलत उत्तर देने, सही उत्तर देने एवं संदेहात्मक उत्तर देने की क्षमता में तुलना की गयी इसके लिए माध्यमान तथा टी० टेस्ट का प्रयोग किया गया है आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर छात्र/छात्राओं के सही उत्तर देने, गलत उत्तर देने तथा संदेहात्मक उत्तर देने की क्षमता में कोई अन्तर नहीं है।

शोध परिणाम तथा निष्कर्ष–सारणी–01

बल श्रमिक बालक एवं बालिकाओं की गणित एवं हिन्दी विषय में शिखने की क्षमता के मापन हेतू माध्य तथा टी–मान

क्र. सं.	लिंग	कुल संख्या	माध्य	टी–मान	विश्वास का स्तर
1	बालक बालिका	15 15	10.4 11.2	.6354	– –
2	बालक बालिका	15 15	2.53 2.46	.0707	– –
3	बालक बालिका	15 15	0.53 0.33	.450	– –

सारणी –2

क्र. सं.	लिंग	कुल संख्या	माध्य	टी–मान	विश्वास का स्तर
1	बालक बालिका	15 15	13.46 15.73	1.70	– –
2	बालक बालिका	15 15	06.53 03.06	2.98	– –
3	बालक बालिका	15 15	00.66 01.20	0.55	– –

3. सारणी से स्पष्ट है कि प्रत्येक वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र में दो कमरे है इसके अतिरिक्त कोई अन्य कमरा नहीं है, शिक्षा केन्द्र की परिसीमा हो चुकी है, पीने के पानी की, पर्याप्त सुविधा है, शौचालय की व्यवस्था है, अध्ययन हेतु चार्ट एवं खिलौनों की व्यवस्था है, छात्रों के लिए फर्नीचर की स्थिति ठीक नहीं है, अध्यापक के लिए सम्पूर्ण कार्य करने हेतु केवल एक मेज की व्यवस्था है। इन शिक्षा केन्द्रों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने हेतु अधिक सुविधाएं उपलब्ध करने की आवश्यकता है जिससे की बाल श्रमिक अध्ययन करके सफलता प्राप्त कर सके।

सारणी–3 अभिभावकों की अभिवृत्ति मापन हेतू माध्य तथा टी–मान

अभिभावक	लिंग	संख्या	मध्यमान	टी–मान	विश्वास का स्तर
10	पुरूष	05	23.6	.83	–
	स्त्री	05	23.8		–

4. बाल श्रमिक अभिभावक अभिवृत्ति मापनी से प्राप्त परिणामों के माध्यमान व टी मान से यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला अभिभावकों की अभिवृत्ति, वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों के प्रति पुरूष अभिभावकों की अभिवृत्ति की तुलना में काफी अच्छी है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कुलकर्णी, एस०एस० 1970 ऑल इंडिया सर्वे ऑफ अचीबमेन्ट इन मैथमैटिक्स नई दिल्ली एन०सी०ई०आर०टी०
2. Research Trend in U.P. in elementry education an analytical study (1992–97)
   By R.N. Sharma, Ex. Director S.C.E.R.T. U.P. Lucknow
   S.P. Pandey, Consultant S.C.E.R.T. U.P. Lucknow
3. जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम प्रथम भाग प्रोग्रेस ओवरविउ रिर्पोट 11th जॉइन रिव्यू मिशन (मार्च अप्रैल 2000)
4. Adoy. P. And stayer, M. (1995) really raising standarts: cognitive intervention and academic achievement London Routledge.
5 N.C.E.R.T. (1994) Teacher Policy Training needs and perceived professional status, in research based intervention in Primary eduction the DPEP strategy NCERT New Delhi.
6. Jangira, N.K. and yadav D.D. (1994) Learning achievement of Primary school children in reading and mathematics. Base line assessment study of four distt. of Asam India New Delhi DTE and SE, N.C.E.R.T.